वर्ष 51 ▪ अंक 04 ▪ अप्रैल 2024

₹ 25/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

वर्ष 51 ● अंक 4 ● अप्रैल 2024 ● पृष्ठ 44

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : श्री राकेश मुटरेजा ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्पलेक्स, दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : डॉ० विजय शर्मा

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail : hduniya.hindi@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
26. पहेलियाँ
34. पढ़ो और हँसो
41. रंग भरो
42. आपके पत्र मिले

चित्रकथायें

12. चित्रकथा
28. किट्टी

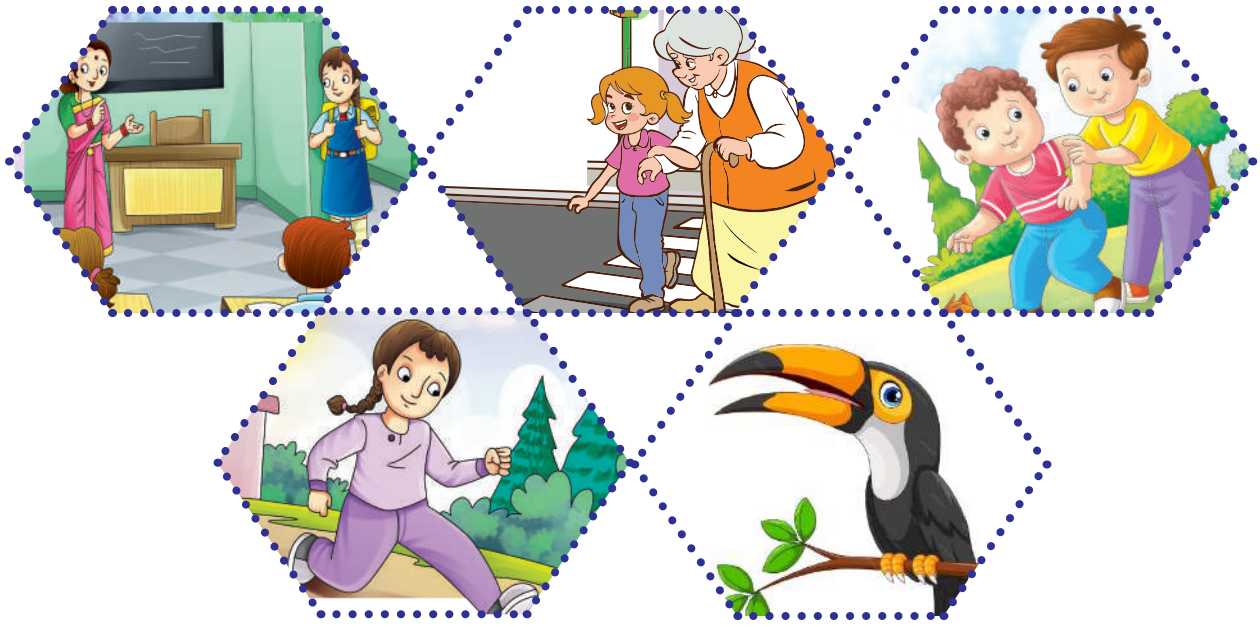

विशेष/लेख

16. पृथ्वी का निरंतर ......
— जसविंदर शर्मा

24. जंगली भैंसा
— किरणबाला

27. बड़े दाँतों का बबीरूसा
— जयेन्द्र

32. टूकन
— परशुराम शुक्ल

कविताएं

7. मानवता ही धर्म
— भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

11. मीठी बोली
— कमल सिंह चौहान

11. नेक बालक
— डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी

23. तभी बचेगी अपनी धरती
— हरजीत निषाद

23. धरती का आँगन
— राजेश कुमार

33. नन्हीं चिड़िया
— गौरीशंकर वैश्य

33. जीवन में कुछ काम करो
— महेन्द्र सिंह शेखावत

39. पानी, साफ–सफाई
— नमिता वैश्य

कहानियां

8. दोहरा सबक
— डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

18. सच्ची सफलता
— प्रवीण कुमार सहगल

25. सबक
— मनीपाल सिंह

36. मरहम
— सीताराम गुप्ता

37. दाने की कीमत
— अमर सिंह शौल

38. चिड़िया बन गई प्रेरणा
— दिनेश दर्पण

सोच को हमेशा सकारात्मक रखें

शिक्षक महोदय जैसे ही कक्षा में पहुँचे, उन्होंने देखा कि दो बच्चे आपस में एक–दूसरे को भला–बुरा कह रहे हैं। बच्चों ने जैसे ही शिक्षक को देखा, दोनों शिक्षक के पास पहुँचकर एक–दूसरे की शिकायत करने लगे। एक बच्चे को सभी विद्यार्थी बुरा कहते रहते थे और दूसरे को हमेशा ही अच्छा माना जाता था। शिक्षक ने भी पहले अच्छे कहलाने वाले बच्चे से झगड़े का कारण पूछा तो उसने कहा कि बिना बात पर यह अपशब्दों के साथ हमें बुलाता है। इतने में ही दूसरा बच्चा जिसे बुरा बच्चा कहते थे वह बीच में ही बोल पड़ा कि जब मुझे सभी बुरा कहते हैं तो मैंने बुरा कहकर कोई गलत काम नहीं किया, जबकि इसे तो सब अच्छा मानते हैं फिर इसने जवाब में मुझे वापस गाली क्यों दी? तब इसकी अच्छाई कहाँ चली गई थी? अब आप बताएँ कौन बुरा है और कौन भला?

शिक्षक ने कहा, "आप दोनों शान्त होकर अपनी–अपनी जगह पर बैठ जाएँ।" फिर शिक्षक ने कहना प्रारम्भ किया कि मैं आपको एक घटना सुनाता हूँ। एक पिता की दो पुत्रियां थीं। एक का नाम था कामना और दूसरी का नाम भावना। सभी कामना को बुरी और भावना को भली कहते थे। एक दिन कामना अपने पिता के पास पहुँची और कहने लगी कि पिता जी आप किसे प्यार करते हैं मुझे या भावना को। पिता जी का स्वाभाविक उत्तर था कि मैं दोनों से बराबर प्यार करता हूँ। लेकिन कामना नहीं मानी और ज़िद पर अड़ गई कि आपको यह तो बताना ही पड़ेगा कि आप किससे अधिक प्यार करते हैं। पिता के लिए स्थिति बहुत गम्भीर हो गई थी। पिता ने कहा कि भावना को भी बुला लाओ।

कामना और भावना दोनों पिता के पास पहुँच गईं। अब पिता जी ने दोनों बहनों से कहा कि सामने कुछ दूरी पर वह वृक्ष है वहाँ तक आपने जाना है और फिर वापस मेरे पास आना है। इसका निर्णय उसके बाद ही किया जा सकेगा। दोनों बहनें धीरे–धीरे वृक्ष तक पहुँच गईं। अब निर्णय का समय था दोनों उत्सुक थीं। पिता जी बोले– भावना तुम आती हुई अच्छी लगती हो और कामना तुम जाते हुए।

दोनों बच्चों को समान देखना पिता की दृष्टि को दर्शाता है परन्तु साथियों, यहाँ कामना बुराई और भावना अच्छाई का प्रतीक है। जीवन में हमेशा बुराई जाते हुए अच्छी लगती है चाहे वह स्वभाव में हो या दिमाग में, अच्छाई तो हमेशा अच्छी ही लगती है परन्तु अच्छाई का नाटक या आदत तो कभी भी देर तक नहीं ठहरती। असलियत सामने आ ही जाती है। स्वास्थ्य आता हुआ अच्छा लगता है और बीमारी जाते हुए। सफलता हमारे पास आती हुई अच्छी लगती है और असफलता जाते हुए; अशान्ति जाते हुए अच्छी लगती है, शान्ति आते हुए अच्छी लगती है। सुख और लाभ आते हुए, दुख और हानि जाते हुए।

इसी तरह चाहे क्रोध हो, अपयश हो या लोभ हो ये किसी के घर में निवास कर लें तो सबका जीवन खराब हो जाता है।

प्यारे साथियों, इन सभी के साथ हमें आलस्य को भी भगाना है यानि वह जाता हुआ अच्छा लग। स्फूर्ति से हर कार्य को करें, विद्यार्थी को परिश्रम करना अच्छा लगे, अपने आप में विश्वास करना आए तो उसके हर कार्य में सफलता निश्चित है। हमेशा अपनी सोच को सकारात्मक रखें यही सफलता की कुंजी है।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण हरदेव बाणी

पद संख्या – 4

निर्गुण न्यारे सर्व आधारे तेरा ही जग सारा है।
सूरज चन्दा तारों में भी तेरा ही उजियारा है।
हर कारज में शक्ति भरने वाला शक्तिमान है तू।
बन्दा है मिट्टी का पुतला तू जीवन है प्राण है तू।
कण कण में तू आप विराजे हर घट तेरा आसन है।
तुझ बिन इक पत्ता न हिलता सब पर तेरा शासन है।
सबकी रचना करके सबको पाल रहा है दाता तू।
और समेटे खुद में सबको प्रलय जब भी लाता तू।
तू सुख दाता तू दुखहर्ता आनंद का है मालिक तू।
कहे 'हरदेव' गुरु से जाना सबमें ही है व्यापक तू।

पद संख्या – 5

साहिब तू बेअन्त है तेरा अन्त कोई क्या पायेगा।
तू निर्गुण न्यारा है तेरे गुण कोई क्या गायेगा।
तुझसे धरती तुझसे अम्बर तुझसे चांद सितारे हैं।
कायम दायम जगह पे अपनी तेरे दम से सारे हैं।
तू सृष्टि का निर्माता है तू ही इसे चलाता है।
जल थल नभ के हर प्राणी को तू भोजन पहुंचाता है।
तुझसे दिन निकलता है और तुझसे होती रात है।
जग में जिसने जो पाया है सब तेरी सौग़ात है।
ऐ जहां के मालिक तूने कुल संसार संभाला है।
कहे 'हरदेव' ये रचना तेरी तू इसका रखवाला है।

अनमोल वचन

संग्रहकर्ता : विभा वर्मा

❖ ज्ञान और कर्म के संगम से ही पृथ्वी स्वर्ग बनेगी। – बाबा हरदेव सिंह जी महाराज

❖ मनुष्य उतना ही महान होगा जितना वह अपनी आत्मा में सत्य, त्याग, दया, प्रेम और शान्ति का विकास करेगा। – स्वेट मार्डेन

❖ हँसने और प्रसन्न रहने में कुछ प्रयास की आवश्यकता है। अपने को प्रसन्न रखना भी एक कला है। – लॉर्ड वेबरी

❖ सच्चा प्रयास कभी विफल नहीं होता। – चिल्सन

❖ कर्म ज्ञान और भक्ति इन तीनों का जिस जगह ऐक्य होता है वही जेष्ठ पुरुषार्थ है। – अरविन्द घोष

❖ प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भण्डार है पत्ते–पत्ते में शिक्षा पूर्ण पाठ है परन्तु उनसे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है। – हरिऔध

❖ उत्तम शिक्षा कहीं से भी मिले तो लेने में संकोच नहीं करना चाहिए। – चाणक्य

❖ जिसके साथ सत्य है, वह अकेला होता हुआ भी बहुमत में है। – शेक्सपियर

❖ जब–जब हम गिरते हैं हमें आगे चलने का तजुर्बा हो जाता है। – सुकरात

❖ पड़ोसी से प्रेम करने वाला विपत्ति में भी सुखी रहता है, जबकि पड़ोसी से वैर करने वाला सम्पत्ति में भी दुःखी रहता है। – रामप्रताप त्रिपाठी

❖ जो अपने हिस्से का काम किये बिना ही भोजन पाते हैं वे चोर हैं। – महात्मा गाँधी

❖ सहानुभूति एक ऐसी विश्वव्यापी भाषा है, जिसे सभी प्राणी समझते हैं। – जेम्स एलेन

❖ समृद्धियाँ पराक्रमी मनुष्य के साथ रहती हैं, अनुत्साही मनुष्य के साथ नहीं। – भारवि

❖ मनुष्य अपनी परिस्थितियों का निर्माता आप है। जो जैसा सोचता है और करता है, वह वैसा ही बन जाता है। – ऋग्वेद

❖ बलवान वही होता है जिसमें आत्मबल होता है।

❖ क्रोधी मनुष्य राक्षस की तरह भयंकर बन जाता है।

❖ लोभ से धर्म का नाश हो जाता है।

❖ सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है जो वाणी से नहीं अपने आचरण से प्रस्तुत किया जाता है।

❖ बिना ईमानदारी के जीवन के किसी भी क्षेत्र में कामयाब नहीं हो सकते।

❖ झूठे बहाने नुकसानदेह साबित होते हैं।

❖ विश्वास और सच्ची लगन से कार्य करने पर अवश्य सफलता मिलती है।

❖ प्रगतिशील विचारधारा वाले लोगों की संगत करें।

❖ अगर आप प्रयास करेंगे तो विश्वास मानिये एक दिन आपको सफलता अवश्य मिलेगी। – अज्ञात

मानवता ही धर्म

– भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

मानवता ही परम कर्म है,
मानवता ही धर्म।
मानवता में ही समाहित है,
मानव–तन का मर्म।।

सत्य न्याय सद्भाव अहिंसा,
क्षमा दया उपकार।
सेवा संयम मानवता के,
शुभ शाश्वत आधार।।

दानवता है मानवता से,
सभी भाँति प्रतिकूल।
जिससे मिलते मानवता को,
नित्य निरन्तर शूल।।

मानवता से बढ़कर कोई,
योग न भक्ति न ज्ञान।
जिसमें है मानवता जग में,
मानव वही महान।।

धन वैभव सौंदर्य असीमित,
भाँति–भाँति सुख–भोग।
मानवता के बिना सभी हैं,
जन जीवन के रोग।।

मानवता ही करती सबका,
प्रेम–पूर्ण उपचार।।
मानवता से ही बन सकता,
विश्व एक परिवार।।

दोहरा सबक

– डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

मदन जब भी बाजार से कोई सामान लाता, वह सामान को पॉलीबैग्स में डालने को कहता। लाल, हरे, नीले, सफेद और काले रंग के पॉलीबैग्स उसे बहुत अच्छे लगते थे। दुकानदार भी छोटे–बड़े आकारों के पॉलीबैग्स को गड्डी बनाकर रखते थे। हल्के सस्ते और रंग–बिरंगे होने की वजह से मदन के लिए पॉलीबैग्स में सामान लाना सुविधाजनक था लेकिन उसे इस बात की कतई जानकारी नहीं थी कि ये रंग–बिरंगे पॉलीबैग्स कैंसर जनक रसायनों से बनते हैं। काले रंग के पॉलीबैग्स कैंसरजनक रसायनों से बनते हैं। काले रंग के पॉलीबैग्स तो सबसे अधिक हानिकारक माने गए हैं क्योंकि इनका निर्माण पॉलीथीन के बार–बार चक्रण के उपरांत किया जाता है।

माँ बाजार से लाए गए सामान को रसोईघर में रख देती और पॉलीबैग्स को घर के बाहर रखे नीले कूड़ेदान में डाल आने को कहती। लेकिन मदन सीधे तौर पर ठीक–ठाक काम कर ले, यह उसके स्वभाव में शामिल नहीं था।

घर के ठीक बगल में ही एक खाली प्लॉट था जिसमें पड़ोसी घर का कूड़ा–कर्कट डाल दिया करते थे। साथ ही दोपहर के समय पॉलीबैग्स में रोटी, सब्जी व बचे हुए फल भी रखकर वहाँ रख देते थे। दरअसल, दोपहर को प्लॉट में कुछ पशु आकर बैठ जाते थे। भूखे होने एवं चारा न मिलने के कारण वे इसे खाते और आराम भी करते। मदन को इससे बढ़िया जगह भला कहाँ मिलती? वह रोज–रोज घर के खाली पॉलीबैग्स इसी प्लॉट में डालता रहता।

अचानक एक दिन हादसा हो गया। प्लॉट में बैठी कुछ गायें बीमार पड़ गईं। गायों को पशु चिकित्सालय ले जाया गया। पशु चिकित्सक ने जाँच करते हुए बताया कि उनके पॉलीथीन बैग्स निगल जाने के कारण ऐसा हुआ है। दवा दे गयी। यह तो अच्छा हुआ कि गायों की मृत्यु नहीं हुई क्योंकि सही समय पर गायों का इलाज करवा दिया गया।

फिर क्या था। पड़ोस के श्रीवास्तव अंकल ने प्लॉट पर निगरानी शुरू कर दी। उस रोज भी मदन खाली प्लॉट में पॉलीबैग्स डालकर घर की ओर मुड़ने ही वाला था कि पकड़ में आ गया।

"तो तुम हो बच्चू जो चुपके–चुपके यहाँ पॉलीबैग्स डालकर जाते हो।" श्रीवास्तव अंकल ने मदन के कंधे पर अपने भारी–भरकम हाथ रखते हुए कहा।

"मुझे माफ कर दो अंकल, फिर ऐसा नहीं करूँगा।" मदन ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"क्या तुम्हें पता है कि ये पॉलीबैग्स पशुओं के लिए कितने हानिकारक हैं। अनजाने में मूक पशु इन्हें निगल

जाते हैं जो आँतों में जाकर रूकावट पैदा कर देते हैं। परिणाम यह निकलता है कि पशु बीमार हो जाते हैं। कभी–कभी तो पशुओं की मृत्यु भी हो जाती है। '

'हाँ, कल जो गायें बीमार पड़ी थीं, तुम्हारे पॉलीबैग्स निगलने के कारण ही हुईं।'' श्रीवास्तव अंकल ने रोबदार आवाज में अपनी मूँछों पर ताव देते हुए कहा।

आखिकरकार श्रीवास्तव अंकल का हृदय द्रवित हो गया। उस समय वहाँ उन दोनों के अलावा कोई भी मौजूद नहीं था। अतः श्रीवास्तव अंकल ने सबक सिखाकर मदन को माफ कर दिया। मदन दबे पाँव घर में घुसा और अपने कमरे में लेट गया।

अगले दिन माँ ने मदन से कुछ और सामान लाने के लिए बाजार भेजा। मदन ने पुनः दुकानदार से सामान को पॉलीबैग्स में डलवाया। आखिर ये पॉलीबैग्स उसकी कमजोरी जो बन चुके थे।

अन्य दिनों की भाँति माँ ने सामान निकालते हुए खाली पॉलीबैग्स मदन को थमा दिया और बोली, ''जाओ इन्हें कूड़ेदान में डाला आओ।''

मदन ने पॉलीबैग्स अपने हाथ में थामे। उसने तो पहले ही यह योजना बना ली थी कि वह इनको घर के पिछवाड़े बने बगीचे में ले जाकर जमीन खोदकर गाड़ देगा। ''ऐसा करने से न तो किसी पशु की मृत्यु होगी और न ही व्यक्ति को असुविधा ही।'' मदन ने मन ही मन विचार किया। अब तो आए दिन मदन ऐसा ही करने लगा था। माँ से खाली पॉलीबैग्स लेता और बगीचे में जमीन में जगह–जगह पर गाड़ देता।

बगीचे में तरह–तरह के पौधे थे– गुलमोहर, गेंदा, गुलाब, चंपा, चमेली आदि। पौधे मदन को अत्यंत प्रिय लगते थे। वह इनकी नियमित देखभाल भी करता था। पौधों को खाद और पानी देना उसकी नियमित दिनचर्या का हिस्सा था।

लगभग दो माह बीते। मदन ने देखा कि उसके द्वारा बोए गए बीज अंकुरित नहीं हो पाए थे। बाकी के पौधों में भी खास वृद्धि नहीं हुई थी। वह सोच में पड़ गया। 'खाद और पानी तो वह बराबर देता रहा है पौधों को। फिर भी ऐसा क्यों?'' यह सोचता–सोचता वह गुलमोहर के नीचे बैठ गया।

''क्या बात है मदन? तुम उदास और दुखी क्यों हो? गुलमोहर बोल उठा।

मदन ने चारों ओर देखा। वह चकित रह गया कि यह आवाज किसकी है आखिर?

गुलमोहर फिर बोला, ''ऊपर की तरफ देखो। मैं हूँ तुम्हारा प्यारा गुलमोहर। तुम जानना चाहते हो न कि तुम्हारे बोए हुए बीज उगे क्यों नहीं? और हाँ, हम सभी पौधे भी क्यों नहीं बढ़ पा रहे हैं?''

''हाँ, हाँ! जल्दी बताओ गुलमोहर भैया।'' मदन का जवाब था।

गुलमोहर ने बताया ''पॉलीथीन का निर्माण एथिलीन और बेंजल्डिहाइड के मिश्रण से किया जाता है जो बायोडिग्रेडेबल नहीं है। यानी सैकड़ों वर्ष तक जमीन में पड़े रहने के बावजूद भी ज्यों का त्यों रहता है, नष्ट नहीं होता है।''

गुलमोहर की बात सुनकर गुलाब भी बोल पड़ा, ''पॉलीथीन मिट्टी को भुरभुरी बनाकर उसकी गुणवत्ता अर्थात् उपजाऊ शक्ति को नष्ट कर देता है।''

''इससे पौधों की वृद्धि में बाधा पड़ती है। कभी–कभी तो वृद्धि रूक भी जाती है।'' चंपा ने जानकारी दी।

चमेली भला कहाँ चुप बैठने वाली थी। तपाक् से बोल उठी, ''हाँ, मदन भैया! इसी पॉलीथीन के कारण जमीन में बोए गए बीजों का अंकुरण भी नहीं हो पाता है।''

अंत में गेंदा ने भी अपनी बात यों कही, ''भूमि प्रदूषण का मुख्य कारण बन चुके पॉलीथीन से ही कृषि योग्य भूमि को भी नुकसान पहुँचता है।''

पौधों की बातें सुनकर मदन की आँखें खुल गईं। अगले रोज से उसने पॉलीथीन से बने सारे बैग घर से बाहर बने हुए नीले रंग वाले कूड़ेदान में डालने शुरू कर दिए। उसे माँ की बात याद हो आई, ''बेटा! नीले रंग के कूड़ेदान में हम जो प्लास्टिक कवर, बोतलें, चिप्स–टॉफी के रैपर, पॉलीथीन बैग, दूध या दही के पैकेट, धातु के कैन और पन्नी कंटेनर्स आदि डालते हैं। उनका पुनर्चक्रण कर दिया जाता है।'' मदन ने बगीचे से भी सारे पॉलीबैग्स निकाल लिए थे।

आज बगीचे के पौधों ने मदन को पुनर्चक्रण सबक सिखा दिया था। ❖

मीठी बोली

– कमल सिंह चौहान

खिल खिलाते प्यारे बच्चे,
भावनाओं में होते कच्चे।
प्रेम करो तो झुक जाते हैं,
होते दिल के पूरे सच्चे।।

क्षण में रूठे मन जाते हैं,
झिड़को तो ये तन जाते हैं।
फूलों से ये कोमल होते,
मीठी बोली होते अच्छे।।

गली मोहल्ले चहका करते,
बातों से हैं फूल खिलाते।
हँसते खिलते गाते रहते,
शाला के ये प्यारे बच्चे।।

इनको सीख सिखाओं अच्छी,
भारत माँ का रूप हैं बच्चे।
जैसा ढालों ढल जायेंगे,
मिट्टी के बरतन हैं कच्चे।।

नेक बालक

डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी

सबको समझे अपना भाई,
घर में करता नहीं लड़ाई।
अपनी रखता साफ सफाई,
और चाहता देश भलाई।।

मात–पिता को शीश झुकाता,
वही नेक बालक कहलाता।
जो सबसे मिल–जुलकर रहता,
अच्छी–अच्छी पुस्तक पढ़ता।।

मीठी–मीठी बातें करता,
अपने पथ पर हरदम बढ़ता।
बाधाओं से ना घबराता,
वही नेक बालक कहलाता।।

जो दुःखियों के दुःख हर लेता,
और बड़ों का आदर करता।
जनहित–सेवा कदम बढ़ाता,
सदा प्रेम–सरिता में बहता।।

जो ईश्वर को शीश नवाता,
वही नेक बालक कहलाता।

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

उस गीदड़ ने बैल और बारहसिंघा के साथ दोस्ती करने की सोची। वे दोनों गीदड़ की चिकनी–चुपड़ी बातों में आ गए।

कुछ दिन बाद ही उसने अपनी योजनानुसार बैल और बारहसिंघा को एक–दूसरे के खिलाफ अकेले में कान भरने शुरू कर दिए।

वह बारहसिंघा से बोला, ''मित्र! तुम्हें बैल मारना चाहता है। ऐसी बात उसने मुझसे कही है।''

अगले दिन गीदड़ ने बैल से जाकर कहा, "बैल भैया! अभी–अभी बारहसिंघा मुझसे कह रहा था कि वह तुम्हें अपने सींगों से मार डालेगा।"
इस प्रकार गीदड़ की बात ने दोनों मित्रों के मन में शंका का अंकुर उपजा दिया क्योंकि वे कान के कच्चे और अहंकारी थे।
वे गीदड़ की बात को सच मानकर एक–दूसरे के शत्रु बन बैठे और वे अलग–अलग रहने लगे।
गीदड़ ने भी अपनी योजनानुसार उन्हें एक–दूसरे के खिलाफ भड़काने का काम जारी रखा।

अचानक एक दिन वे दोनों गुस्से में आमने–सामने आ गये और गीदड़ ने देखा कि बैल और बारहसिंघा लड़ने के लिए मैदान में उतर आए हैं।

वह उनकी लड़ाई देखने के लिए एक झाड़ी में छिपकर बैठ गया।

वे दोनों लड़ते–लड़ते लहूलुहान होकर गिर गये।

धोखेबाज गीदड़ ने इस मौके का फायदा उठाया और उसने दोनों का अन्त कर दिया।

शिक्षा : तीसरे की कुटिलता दो दोस्तों में दुश्मनी पैदा कर देती है इसलिए दोस्ती सोच–समझ और परख कर ही करनी चाहिए।

पृथ्वी का निरंतर बढ़ता तापमान

– जसविंदर शर्मा

ग्लोबल वार्मिंग का सीधा अर्थ है– हर वर्ष पृथ्वी के धरातल के औसत तापमान में वृद्धि होना। इसके भयानक परिणाम सामने आने लगे हैं। पृथ्वी के आसपास गैसों से भरे वातावरण की एक चादर है जिसमें हम रहते हैं और सांस लेते हैं। इस चादर में मुख्यतः दो गैसें यानि नाइट्रोजन और ऑक्सीजन बहुतायत में है। हमारे वातावरण में पानी के वाष्पकण, कार्बन डाई–ऑक्साइड और मीथेन गैसें भी प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं।

पानी के वाष्पकण, कार्बन डाई–ऑक्साइड और मीथेन धरती की गर्मी को सोखते हैं और नमी को बाहरी स्पेस में जाने से रोकते हैं जिसके कारण धरती के वातावरण का तापमान बढ़ता है। इसे ग्रीन हाउस प्रभाव कहा जाता है। पानी के वाष्पकण 50 प्रतिशत, कार्बन डाई–ऑक्साइड 26 प्रतिशत और मीथेन 9 प्रतिशत ग्रीनहाउस पैदा करते हैं और इसलिए इन तीनों तत्वों को ग्रीनहाउस गैसें कहा जाता है।

ये ग्रीनहाउस गैसें धरती पर ऐसा प्रभाव पैदा करती हैं जैसे काँचघर के शीशे गर्मी को अपने अन्दर रोकते हैं। ग्रीनहाउस गैसों के आभमंडल से गुजरकर सूरज की किरणें धरती पर पड़ती हैं जब धरती का धरातल यानि भूमि, पानी और वायुमण डल सूरज की ऊर्जा को अवशोषित करते हैं और फिर भी भी कुछ ऊर्जा वापिस स्पेस में लौट जाती है। बहुतायत में यह ऊर्जा ग्रीनहाउस गैसों के कारण धरती पर रह जाती है।

ग्रीनहाउस प्रभाव पृथ्वी के लिए बहुत उपयोगी है। इसके बिना धरती इतनी गर्म नहीं हो पाती जितना तापमान जीवधारियों और पौधों को जिन्दा रहने के लिए जरूरी होता है। परन्तु अगर यह ग्रीनहाउस प्रभाव बढ़ता है तो धरती सामान्य से ज्यादा गर्म हो जाएगी। धरती पर बढ़ा जरा–सा तापमान जीवधारियों और पौधों के लिए कई मुसीबतें ला सकता है।

वैज्ञानिकों ने पाया है कि पिछली एक सदी से धरती के औसत तापमान में एक डिग्री फॉरेनहाइट की वृद्धि हुई है। वैज्ञानिकों को पूरा विश्वास है कि आने वाले 200 वर्षों में हमारी धरती के औसत तापमान में 6 डिग्री फॉरेनहाइट तक की बढ़ोत्तरी हो जाएगी। धरती पर बढ़े इस तापमान से वर्षा के पैटर्न में विचित्र बदलाव होंगे, समुद्र का जलस्तर बहुत बढ़ जाएगा तथा धरती पर पौधों और प्राणियों के जीवन बुरी तरह प्रभावित होंगे।

धरती पर वातावरण के परिवर्तन सम्बन्धी इंटर–गवर्नमेंट पैनल यानि आई.पी.सी.सी. ने निष्कर्ष निकाला है कि ग्रीनहाउस गैसों के घनत्व में वृद्धि का मुख्य कारण है कि पिछले 100 सालों में हमने जीवाश्म ईंधनों यानि पेट्रोल व डीजल आदि का जमकर इस्तेमाल किया है तथा वनों की अंधाधुध कटाई की है। औद्योगिक क्राँति के कारण धरती का तापमान गरमाने लगा है।

कुछ तथ्य बेहद चौंकाने वाले हैं। वैज्ञानिकों ने पाया है कि वातावरण में कार्बन डाई–ऑक्साइड

लेने की क्षमता घटी है क्योंकि वनों का लगभग सफाया हो चुका है। पौधों में कार्बन डाई–ऑक्साइड का घनत्व 380 कण प्रति दस लाख कण है तथा सन् 2050 में यह घनत्व बढ़कर 550 कण प्रति दस लाख कण हो जाएगा। ग्रीनहाउस की अन्य गैसों के घनत्व में भी आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि हो रही है जो मानव जाति के लिए आने वाले खतरों की तरफ संकेत है।

ग्लोबल वार्मिंग की मौजूदगी के प्रमाण हमारे सामने हैं। पिछले कुछ दशकों से लगातार बढ़ते गर्म वर्ष तथा भयावह समुद्री तूफान और सुनामी, कैटरीना आदि बताते हैं कि धरती में भयानक बारिश हुई जिसमें एक ही दिन में रिकॉर्ड तोड़ 94 सेंटीमीटर वर्षा हुई थी। यूरोप के कुछ देशों में ग्रीष्मकाल में तापमान 40 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक होना ग्लोबल वार्मिंग के प्रत्यक्ष संकेत हैं।

ग्लेशियर वातावरण परिवर्तन के सबसे संवेदी सूचक माने जाते हैं। वैज्ञानिकों ने 1970 से लेकर अब तक मुख्य ग्लेशियरों की इन्वेंटरी बनाई और पाया कि हिमालय, अलास्का और एंडी पर्वतमालाओं के ग्लेशियर लगातार सिकुड़ रहे हैं। आर्कटिक कैप पिघल रही है। आर्कटिक इलाकों में साधारणतया गर्म क्षेत्रों वाले पौधे उगना यह दिखाता है हम लोग बहुत जल्दी बहुत बड़ी मुसीबत में फँसने वाले हैं। ❖

सच्ची सफलता

– प्रवीण कुमार सहगल

शिल्पा शहर के एक प्रसिद्ध स्कूल में दसवीं कक्षा में अध्ययन करती थी। वह पढ़ाई के साथ–साथ खेलकूद में भी गहन रूचि रखती थी और लम्बी दूरी की दौड़ में हमेशा प्रथम स्थान पर ही आती थी। उसको क्रीड़ा प्रशिक्षक, प्रशिक्षण देकर यह प्रयास कर रहे थे कि वह प्रादेशिक स्तर पर भाग लेकर स्कूल का नाम उज्ज्वल करे। इसके लिए उसके प्राचार्य, शिक्षक, अभिभावक और उसके मित्र सभी उसे प्रोत्साहित करते थे। वह एक सम्पन्न परिवार की लाडली थी। वह क्रीड़ा गतिविधियों में भाग लेकर आगे आए। इसके लिए उसके खान–पान के साथ–साथ अच्छे व्यायाम प्रशिक्षकों का मार्गदर्शन दिए जाने की व्यवस्था भी की गई थी। उसके पिता सदैव उससे कहा करते थे कि मन लगाकर पढ़ाई करने के साथ–साथ ही खेलकूद में भी अच्छी तरह से भाग लो तभी तुम्हारा सर्वांगीण विकास होगा।

शिल्पा की कक्षा में अंकिता नाम की एक नई लड़की ने प्रवेश किया। वह अपने माता–पिता की एकमात्र सन्तान थी और एक किसान की बेटी थी। वह गाँव से अध्ययन करने के लिए शहर में आई थी। उसके माता–पिता उसे समझाते थे कि बेटी पढ़ाई–लिखाई जीवन में सबसे आवश्यक होती है। यही हमारे भविष्य को निर्धारित करती है एवं उसका आधार बनती है। तुम्हें क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में भाग लेने से हम नहीं रोकते किन्तु इसके पीछे तुम्हारी शिक्षा में व्यवधान नहीं आना चाहिए।

एक बार स्कूल में खेलकूद की गतिविधियों में शिल्पा और अंकिता ने लम्बी दौड़ में भाग लिया। शिल्पा एक तेज धावक थी। वह हमेशा की तरह प्रथम आई और अंकिता द्वितीय स्थान पर रही। प्रथम स्थान पर आने वाली शिल्पा से वह काफी पीछे थी।

कुछ दिनों बाद ही दोनों की मुलाकात स्कूल के पुस्तकालय में हुई। शिल्पा ने अंकिता को देखते ही हँसते हुए व्यंग्यपूर्वक तेज आवाज में कहा– "अंकिता, मैं तुम्हें एक सलाह देती हूँ कि तुम पढ़ाई–लिखाई में ही ध्यान दो। तुम मुझे दौड़ में कभी नहीं हरा पाओगी। तुम गाँव से आई हो। अभी तुम्हें नहीं पता कि प्रथम आने के लिए किस प्रकार के प्रशिक्षण एवं अभ्यास की आवश्यकता होती है। मेरे घरवाले पिछले सालों से हजारों रुपये मेरे ऊपर खर्च

कर रहे हैं और मैं प्रतिदिन घंटों परिश्रम करती हूँ तब जाकर प्रथम स्थान मिलता है। यह सब तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के लिए सम्भव नहीं है। इसलिए अच्छा होगा कि तुम अपने आपको पढ़ाई–लिखाई तक ही सीमित रखो।'' इतना कहकर वह अंकिता की ओर उपेक्षा भरी दृष्टि से देखती हुई वहाँ से चली गई।

अंकिता एक भावुक लड़की थी। उसे शिल्पा की बात कलेजे तक चुभ गई। इस अपमान से उसकी आँखों में आँसू छलक उठे। घर आकर उसने अपने माता–पिता दोनों को इस बारे में विस्तार से बताया। पिता ने उसे समझाया– ''बेटा, जीवन में शिक्षा का अपना अलग महत्व है। खेलकूद प्रतियोगिताएँ तो औपचारिकताएँ हैं। मैं यह नहीं कहता कि तुम खेलकूद में भाग मत लो किन्तु अपना ध्यान पढ़ाई में लगाओ और अच्छे से अच्छे अंकों से परीक्षाएँ पास करो। तुम्हारी सहेली ने घमंड में आकर जिस तरह की बात की है वह उचित नहीं है लेकिन उसने जो कहा है वह ध्यान देने लायक है। तुम हार–जीत की परवाह किए बिना खेलकूद में भाग लो और अपना पूरा ध्यान अपनी शिक्षा पर केन्द्रित करो।'' उसकी माँ भी यह सब सुन रही थी। उसने अंकिता के पिता से कहा– ''पढ़ाई–लिखाई तो आवश्यक है ही, साथ ही खेलकूद भी उतना ही आवश्यक होता है। इसमें भी कोई आगे निकल जाए तो उसका भी तो बहुत नाम होता है।'' अंकिता के पिता को उसकी माँ की बात अनुचित लगी। वह भी अंकिता को बहुत चाहते थे। उनकी अभिलाषा थी कि बड़ी होकर वह बड़ी अफसर बने। अंकिता दोनों की बातें ध्यानपूर्वक सुन रही थी। उसकी माँ ने उससे कहा– ''दृढ़ इच्छाशक्ति और कठोर परिश्रम से सभी कुछ प्राप्त किया जा सकता है।''

अंकिता अगले दिन से ही गाँव के एक मैदान में जाकर सुबह दौड़ का अभ्यास करने लगी। वह प्रतिदिन सुबह जल्दी उठ जाती और दैनिक कर्म करने के बाद दौड़ने चली जाती। जब वह कठिन अभ्यास कर रही थी। इसके कारण उसे पढ़ाई करने का समय ही नहीं मिलता था। वह बहुत अधिक थक भी जाती थी। उसके माता–पिता दोनों ने यह देखा

तो उन्होंने यह सोचकर कि विद्यालय आने–जाने के लिए गाँव से शहर आने–जाने में उसका बहुत समय बर्बाद होता है। उन्होंने उसके लिए शहर में ही एक किराये का मकान लेकर उसके रहने और पढ़ने की व्यवस्था कर दी।

शहर आकर अंकिता जिस घर में रहती थी उससे कुछ दूरी पर एक मैदान था। लोग सुबह–सुबह उस मैदान में आकर दौड़ते और व्यायाम करते थे। अंकिता ने भी अपना अभ्यास उसी मैदान में करना प्रारम्भ कर दिया। एक बुजुर्ग वहाँ सैर के लिए आते थे। वे अंकिता को दौड़ का अभ्यास करते देखते थे। कई दिनों तक देखने के बाद वे उसकी लगन और उसके अभ्यास से प्रभावित हुए। एक दिन जब अंकिता अपना अभ्यास पूरा करके घर जाने लगी तो उन्होंने उसे रोककर उससे बात की। उन्होंने अंकिता के विषय में विस्तार से सभी कुछ पूछा। उन्होंने अपने विषय में उसे बतलाया कि वे अपने समय के एक प्रसिद्ध धावक थे। उनका बहुत नाम था। वे पढ़ाई–लिखाई में औसत दर्जे होने के कारण कोई उच्च पद प्राप्त नहीं कर सके। समय के साथ दौड़ भी छूट गई। उन्होंने अंकिता को समझाया कि दौड़ के साथ–साथ पढ़ाई में उतनी ही मेहनत करना बहुत आवश्यक है। अगले दिन से वे अंकिता को दौड़ की कोचिंग देने लगे। उन्होंने उसे लम्बी दौड़ के लिए तैयार करना प्रारम्भ कर दिया।

स्कूल में प्रादेशिक स्तर पर भाग लेने के लिए चुने जाने हेतु अंतिम प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इसमें 1500 मीटर की दौड़ में प्रथम आने वाले को प्रादेशिक स्तर पर भेजा जाना था। प्रतियोगिता जब प्रारम्भ हो रही थी तब शिल्पा ने अंकिता की ओर गर्व से देखा। शिल्पा पूर्ण आत्मविश्वास से भरी हुई थी और उसे पूरा विश्वास था कि यह प्रतियोगिता तो वही जीतेगी। शिल्पा और अंकिता दोनों के माता–पिता भी दर्शक दीर्घा में उपस्थित थे। 'व्हिसिल' बजते ही दौड़ प्रारम्भ हो गई।

शिल्पा ने दौड़ प्रारम्भ होते ही अपने को बहुत आगे कर लिया था। उसके पैरों की गति देखकर दर्शक उत्साहित थे और उसके लिए तालियाँ बजा–बजाकर उसका उत्साह बढ़ा रहे थे। अंकिता भी तेज दौड़ रही थी किन्तु वह दूसरे नम्बर पर थी। वह एक–सी गति से दौड़ रही थी। 1500 मीटर की दौड़ थी। प्रारम्भ में शिल्पा ही आगे रही लेकिन आधी दौड़ पूरी होते–होते तक अंकिता ने शिल्पा की बराबरी कर ली। वे दोनों एक–दूसरे की बराबरी से दौड़ रहे थे। कुछ दर्शक अंकिता को तो कुछ शिल्पा को प्रोत्साहित करने के लिए आवाजें लगा रहे थे। शिल्पा की गति धीरे–धीरे कम हो रही थी जबकि अंकिता एक–सी गति से दौड़ती चली जा रही थी। जब दौड़ पूरी होने में लगभग 100 मीटर रह गये तो

अंकिता ने अपनी गति बढ़ा दी। उसकी गति बढ़ते ही शिल्पा ने भी जोर मारा। वह उससे आगे निकलने का प्रयास कर रही थी लेकिन अंकिता लगातार उसे आगे होती जा रही थी। दौड़ पूरी हुई तो अंकिता प्रथम आई थी। शिल्पा उससे काफी पीछे थी। वह द्वितीय आई थी।

अंकिता की सहेलियाँ मैदान में आ गई थीं और उसे गोद में उठाकर अपनी प्रसन्नता जता रही थीं। वे खुशी से नाच रही थीं। मंच पर प्राचार्य जी आए और उन्होंने अंकिता के विजय की घोषणा की। अंकिता अपने पिता के साथ प्राचार्य जी के पास पहुँची और उसने उनसे बताया कि वह प्रादेशिक स्तर पर नहीं जाना चाहती है। उसकी बात सुनकर प्राचार्य जी और वहाँ उपस्थित सभी लोग आश्चर्यचकित हो गए थे। प्राचार्य जी ने उसे समझाने का प्रयास किया किन्तु वह टस से मस नहीं हुई।

अंकिता ने उनसे कहा कि वह सरकारी सेवा में अफसर बनना चाहती है। इसके लिए उसे बहुत पढ़ाई करने की आवश्यकता है। दौड़ की तैयारियों के कारण उसकी पढ़ाई प्रभावित होती है। इसलिए वह प्रादेशिक स्तर पर जाना नहीं चाहती।

अन्त में प्राचार्य जी स्वयं माइक पर गए और उन्होंने अंकिता के इन्कार के विषय में बोलते हुए शिल्पा को विद्यालय की ओर से प्रादेशिक स्तर पर भेजे जाने की घोषणा की। यह सुनकर शिल्पा सहित वहाँ पर उपस्थित सभी दर्शक भी अवाक् रह गए। शिल्पा अंकिता के पास आई और उसने पूछा कि तुमने ऐसा क्यों किया। अंकिता ने उसे भी वही बताया जो उसने प्राचार्य से कहा था। उसने शिल्पा को बताया कि मेरा उद्देश्य क्रीड़ा प्रतियोगिता में आने का नहीं था वरन् मैं तुम्हें बताना चाहती थी समय सदैव एक–सा नहीं होता। कल तुम प्रथम स्थान

पर थी आज मैं हूँ, कल कोई और रहेगा। उस दिन पुस्तकालय में तुमने जो कुछ कहा था उसे तुम मित्रता के साथ भी कह सकती थी किन्तु तुमने मुझे नीचा दिखाने का प्रयास किया था जो मुझे खल गया था। मेरी हार्दिक तमन्ना है कि तुम प्रादेशिक स्तर पर सफलता प्राप्त करो।

नियत तिथि पर शिल्पा स्टेशन पर प्रतियोगिताओं में भाग लेने जाने के लिए उपस्थित थी। विद्यालय की ओर से प्राचार्य और आचार्यों सहित उसके अनेक साथी एवं उसके परिवार के लोग भी उसे विदा करने के लिए आये हुए थे। प्राचार्य जी ने उसे शुभकामनाएँ देते हुए कहा– ''सच्ची सफलता पाने के लिए मन में ईमानदारी, क्रोध से बचाव, वाणी में मधुरता का होना अत्यंत आवश्यक है। अपने निर्णय सोच–समझकर लेना, ईश्वर पर भरोसा रखना और उसे हमेशा याद रखना। यदि तुम इन बातों को अपनाओगी तो जीवन में हर कदम पर सफलता पाओगी। जीवन में सफलता की कुंजी है वाणी में प्रेम, प्रेम से भक्ति, कर्म से प्रारब्ध, प्रारब्ध से सुख, लेखनी से चरित्र, चरित्र से निर्मलता, व्यवहार से बुद्धि और बुद्धि से ज्ञान की प्राप्ति। मेरी इन बातों को तुम अपने हृदय में आत्मसात करना। ये सभी तुम्हारे लिए जीवन में प्रगति की आधारशिला बनेंगे।''

शिल्पा सभी से मिल रही थी और सभी उसे शुभकामनाएँ दे रहे थे किन्तु उसकी आँखें भीड़ में अंकिता को खोज रही थीं। ट्रेन छूटने में चंद मिनट ही बचे थे तभी शिल्पा ने देखा कि अंकिता तेजी से प्लेटफार्म पर उसकी ओर चली आ रही है। वह भी सबको छोड़कर उसकी ओर दौड़ गई। अंकिता ने उसे शुभकामनाओं के साथ गुलदस्ता भेंट किया तो शिल्पा उससे लिपट गई। दोनों की आँखों में प्रसन्नता के आँसू थे। ❖

तभी बचेगी अपनी धरती

– हरजीत निषाद

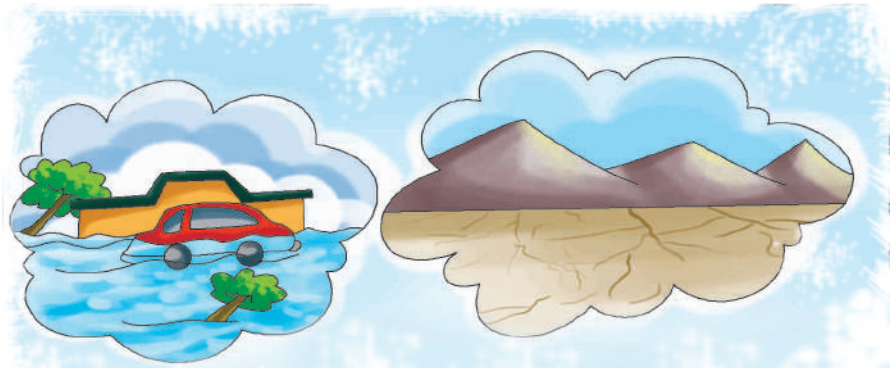

प्रकृति प्रकोप दिखाती है,
तकनीक काम न आती है।
कमजोर हुए सब इंतजाम,
प्राकृतिक आपदा आती है।।

बिगड़ गया कुदरत का चक्र,
तपता सूरज दृष्टि वक्र।
धरती नित हो रही है गरम,
टूट रहा जीवन का चक्र।।

पानी बरसा खूब कहीं,
कहीं पे जल की बूँद नहीं।
जल के स्रोत हैं सूख रहे,
पर मानव को फिक्र नहीं।।

खतरे से सतर्क हो जाएँ,
पेड़ व पानी सभी बचाएँ।
तभी बचेगी अपनी धरती,
मिलजुल पर्यावरण बचाएँ।।

धरती का आँगन

– राजेश कुमार

धरती का आँगन, लगता मनभावन।
झरने झील नदियाँ पर्वत पेड़ कलियाँ।।
गन्ना गेहूँ शहद, पीपल बेर बरगद।
धरती है दयालु, मिट्टी दोमट बालू।।
धरती देती सम्बल, सोना चाँदी पीतल।
जल में है हलचल, गंगा यमुना चम्बल।।
गाय भैंस ढोर, बन में नाचे मोर।
बुलबुल का चहकना, गौरैया का फुदकना।।
सुन्दर संगमरमर, एक से एक बढ़कर।
धरती देती सब कुछ, लेती न कभी कुछ।।

जंगली भैंसा जिससे शेर भी डरे

– किरणबाला

जंगल में तरह–तरह के पशु पाए जाते हैं जो सभी शेर से डरते हैं और उसे सामने देख दुम दबाकर भाग जाते हैं। लेकिन जंगली भैंसा एकमात्र ऐसा जीव है जो शेर से सामना होने पर उससे लोहा लेता है और कई बार शेर दुम दबाकर भाग जाता है।

आमतौर पर जंगली भैंसे अफ्रीका के मध्य भाग में पाए जाते हैं। ये अत्यन्त खूंखार होते हैं। जब ये झुंड में होते हैं तो इनकी ताकत बढ़ जाती है और शेर भी सहसा इन पर हमला नहीं करता और यदि करता है तो ये अपने नुकीले सींगों से उसे अच्छा मजा चखाते हैं। ऐसे में शेर या तो गंभीर रूप से घायल होकर मैदान छोड़कर चला जाता है या फिर मौत को प्राप्त होता है। हाँ, कमजोर, बीमार, बूढ़े या अल्पायु के जंगली भैंसे शेर का शिकार अवश्य बन जाते हैं।

अफ्रीका में पाए जाने वाले जंगली भैंसे आम भैंसों से काफी भिन्न होते हैं। भारत में पाए जाने वाले भैंसे भले ही उनके समान दिखाई देते हो लेकिन ये दोनों अलग–अलग प्रजातियों के जीव हैं जिनका कोई सम्बन्ध नहीं है। यहाँ तक कि उनकी आदतें भी भिन्न होती हैं। अफ्रीकी भैंसे आकार में भारतीय भैंसों से अधिक लम्बे और भारी होते हैं। वयस्क नर भैंसों का भार एक हजार किलोग्राम तक हो सकता है जबकि मादा का भार 750 किलोग्राम तक हो सकता है। ये डेढ़ से दो मीटर तक ऊँचे हो सकते हैं। इनके सींग ही एक मीटर से अधिक लम्बे होते हैं।

जंगली भैसे विशुद्ध शाकाहारी प्राणी है जो घास चरकर अपना पेट भरते हैं। ये झुंडों में घास चरने जाते हैं ताकि शत्रु का डटकर मुकाबला कर सकें।

यद्यपि जंगली भैंसों के शिकार पर प्रतिबंध है, तो भी लोग अवैध रूप से इनका शिकार करते हैं तथा इनके सींगों से अपने ड्राइंगरूम की शोभा बढ़ाते हैं। इनके प्राकृतिक आवास स्थल भी धीरे–धीरे सिमटते जा रहे हैं जिससे इनकी संख्या धीरे–धीरे घटती जा रही है जो एक चिंता की बात है। ❖

सबक

– मनीपाल सिंह

–आखिर तुम हो तो मूर्ख बिल्ल्याँ ही। अपनी परदादियों से तुमने क्या सीखा?– बिल्लू बन्दर ने चिंकी बिल्ली को चिढ़ाते हुए कहा।

–हमारे परदादे ने तुम्हारी जाति की मूर्ख बिल्लियों को बेवकूफ बनाकर पूरी रोटी हजम कर ली थी।– वह बोला।

चिंकी बिल्ली गुस्से से पैर पटकते हुए घर पहुँची। वह बड़बड़ाते हुए बोली– आखिर इन बन्दरों ने हमें समझ क्या रखा है?

–तुम ठीक कहती हो बहन। हम इन बन्दरों को अवश्य मजा चखाएँगे।– यह दूसरी आवाज थी। चिंकी बिल्ली ने पलटकर देखा तो उसके सामने शहर से आई उसकी चचेरी बहन पिंकी थी। दोनों एक–दूसरे के गले मिलीं। वह बोली– मैंने तुम्हारी सारी बातचीत सुन ली है। अपने पुरखों की गलती हम क्यों झेलें। इतना कहकर पिंकी बिल्ली ने उसके कान में अपनी योजना सुनाई।

अगले दिन दोनों बहनें जंगल के बीचों–बीच जाकर लड़ने लगीं। शोर सुनकर बिल्लू बन्दर वहाँ आ पहुँचा। उसने उनके झगड़े का कारण पूछा। – पिंकी बिल्ली कहने लगी– हम यहाँ टहलने के लिये आई हैं। यहाँ एक केक पड़ा हुआ था। मैंने जैसे ही केक को उठाया, यह मुझसे झगड़ने लगी और कहने लगी कि यह केक मेरा है।

–अब तुम ही हमारा फैसला करो न बन्दर भाई।– चिंकी बोली।

केक को देखकर बिल्लू बन्दर के मुँह में पानी भर आया। बिल्लू बन्दर को मन ही मन उनकी मूर्खता पर हँसी आ रही थी। उसने केक को दो टुकड़ों में विभाजित कर दिया। एक टुकड़ा बड़ा था और एक छोटा। उसने अलग–अलग टुकड़े दोनों बिल्लियों को दे दिया।

–बन्दर भाई हमें बराबर के टुकड़े चाहिए। क्यों चिंकी बहन?– पिंकी बोली।

–हाँ, हाँ हमें बराबर के टुकड़े चाहिएं।– चिंकी बोली। यह सुनकर बिल्लू ने केक के बड़े टुकड़े का एक और टुकड़ा कर दिया और उसे इत्मीनान से अपने मुँह में रख लिया। लेकिन यह क्या? उसका जबड़ा टस से मस न हुआ। उसने अपनी पूरी शक्ति से जबड़े को हिलाना चाहा। इसी कोशिश में उसके सभी दाँत टूट गये। वह नदी की ओर भागा। पीछे से चिंकी और पिंकी के हँसने की आवाजें आईं। असल में पिंकी बिल्ली ने उस केक में शहर से लाई एक खास दवा डाल रखी थी। तीन–चार दिन बाद जब बिल्लू बन्दर ने अपनी शक्ल आईने में देखी तो वह अपने आपको पहचान न सका। इस घटना के बाद बिल्लू बन्दर ने किसी बिल्ली को नहीं चिढ़ाया। ❖

– प्रस्तुति : गौरीशंकर वैश्य

पहेलियाँ

1. जीवन वृक्ष या श्रीफल कह लो,
इसकी गाथा बहुत पुरानी।
इसके तने से घर बन जाते,
फल दे दूध, तेल और पानी।।

2. मछली जिसका रंग सुनहरा,
देख ले पराबैंगनी तरंग।
आँखें खोलकर सो सकती है,
कीड़े खाकर भरे उमंग।।

3. सफेद रंग का द्रव होता है,
इसमें वसा, प्रोटीन कैसीन।
पी लो या घी, दही बना लो,
देता है बल–बुद्धि नवीन।।

4. केरोटिन–प्रोटीन से बनी,
सिर के ऊपर उगे फसल।
काटो तो हो दर्द नहीं,
काला, सफेद में जाए बदल।।

5. गला–वक्ष को छोड़कर,
इस पक्षी का रंग है नीला।
मुड़ी चोंच होती नीचे को,
कीट–शिकार में है फुर्तीला।।

6. सूखा–सा मेवा होता है,
ऊँचे तरू में, फल अति दूर।
मीठा स्वाद, बहुत गुणकारी,
खनिज–विटामिन से भरपूर।।

7. लंबे–हरे बेल से लटके,
फाइबर, विटामिन से भरपूर।
कच्चा खाओ, सलाद बनाओ,
भोजन से मत रखना दूर।।

8. दानों से हैं चावल मिलते,
खरीफ फसल होती, लो जान।
पौधा पानी अधिक माँगता,
जल्दी करो नाम अनुमान।।

9. तालाबों–झीलों में उगता,
फल होता है गोल–तिकोना।
कच्चा या उबालकर खाओ,
हल्का मीठा, स्वाद सलोना।।

10. ईंधन जब सम्पूर्ण जलता है,
हो जाये साकार।
राख, कार्बन, कण तेलों के,
इसको दे आकार।।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

बड़े दाँतों का बबीरुसा

– जयेन्द्र

बच्चो! यह बात तो तुम अच्छी तरह जानते ही हो कि दुनिया में अजब–अनोखे पशु–पक्षी भी पाये जाते हैं। यहाँ एक ऐसे ही अजूबे पशु 'बबीरुसा' का जिक्र है।

इंडोनेशिया के 'मौलुका' और 'सेलेबस' नामक टापुओं पर 'बबीरुसा' नामक एक अनोखा सूअर पाया जाता है। यह एक तरह का अजूबा जंगली सूअर है तथा दुनिया की विभिन्न प्रजातियों के सूअरों से बिल्कुल भिन्न है। इसकी आकृति गधे की तरह होती है। वर्ण गहरा लाल, कत्थई, चितकबरा या काला भी होता है। इसके दाँत बहुत पैने और बड़े–बड़े होते हैं।

यह अक्सर दलदली जंगलों में समूह में रहता है। नर बबीरुसा का ऊपर का दाँत विचित्र प्रकार का घुमाव लेकर थूथन से शुरू होकर माथे तक जाता है। इसके दाँत 50 से.मी. तक लम्बे होते हैं। मादाओं के मुँह पर केवल मांस की गाँठे होती हैं। वे हरी वनस्पति की जड़ों, कन्दमूल और फलों को खाती हैं।

इनमें बच्चे की जन्मदर बहुत कम होती है। मादा बबीरुसा एक समय में केवल एक या दो बच्चों को ही जन्म देती है। वह इनकी सेवा रक्षा 20–25 दिनों तक करती है। अपना दूध पिलाती है तथा किसी गड्ढे में छिपाकर रखती है ताकि हिंसक पशु एकाएक इनका शिकार न कर सके।

नर बबीरुसा गधे की तरह बड़ा सुस्त और सनकी मिजाज का होता है। घंटों तक वह एक जगह खड़ा या बैठा रहता है। मादा के खदेड़ने पर वह उठकर घास, कन्दमूल खाकर पेट भरता है। कई बार यह घंटों तक अपनी भाषा में गधे की तरह कर्कश आवाजें भी निकालता रहता है। इसकी औसत उम्र 8 वर्ष होती है। इसकी खाल व दाँतों से कई सजावटी सामग्री तैयार की जाती है। इसके शरीर के बालों से ब्रुश बनाये जाते हैं। यह एक अच्छा तैराक भी होता है। अपने दाँतों की बदौलत यह शत्रुओं को मार भगाता है। ❖

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

मौली और किट्टी देखो... मैं तो इस टहनी तक पहुँच गया और आराम से कूदकर नीचे भी उतर जाऊँगा।
वाह चिंटू! बहुत बढ़िया।
अब मोंटू की बारी... मैं सबके बाद और सबसे ऊपर चढ़कर दिखाऊँगी और पहले स्थान पर आऊँगी।
अरे वाह मोंटू! तुमसे ऊपर तो किट्टी भी नहीं चढ़ पाएगी। हा... हा... हा...!!

देखो मौली, देखो, देखो! मोंटू और चिंटू तुम भी देखो। मैंने कहा था न कि मैं ही जीतूँगी। याहू... याहू।
अरे वाह! क्या खूब! किट्टी तुमने तो कमाल कर दिया। सच में तुम बहुत होशियार हो।
आह! मेरा पैर... पेड़ से गिरकर मेरे पैर पर चोट आ गई। कोई मम्मी को बुला लाओ। मैं खड़ी नहीं हो पा रही।

किट्टी बेटा, क्या हुआ? मैंने तुम्हें कहा था न कि आराम से खेलना। देखा बात न मानने का नतीजा।
लो किट्टी बेटा, जूस पी लो। तुम्हें कितनी बार कहा है कि ज़िद मत किया करो, देखो लग गई न चोट।
सॉरी मम्मा, आगे से ध्यान रखूँगी। आपकी हर बात मानूँगी।

एक अद्भुत शाकाहारी पक्षी

टूकन

– परशुराम शुक्ल

दक्षिण अफ्रीका के घने जंगलों में टूकन नामक एक ऐसा विलक्षण पक्षी पाया जाता है, जिसकी चोंच उसके शरीर के आकार से भी बड़ी होती है। यह राम्फास्टिडाए नामक दुर्लभ प्रजाति का पक्षी है। विश्व में इस प्रजाति की दो सौ जातियाँ थीं, जिनमें से केवल सैंतीस जातियाँ बची हैं, शेष जातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं या विलुप्त होने को है।

टूकन का शरीर भारी होता है तथा इसकी चोंच नारंगी रंग की लम्बी और मोटी होती है। इसकी कुछ जातियों की चोंच तो इसके पूरे शरीर से भी अधिक लम्बी होती है। लेकिन इससे इसे कोई कठिनाई नहीं होती है, बल्कि लाभ ही होता है। इसे अपना पेट भरने के लिए इधर–उधर अधिक भटकना नहीं पड़ता। अपनी लम्बी चोंच के द्वारा यह एक ही डाल पर बैठा–बैठा आस–पास की डालियों के फल–फूल आदि आसानी से खा लेता है। इसके साथ ही साथ लम्बी–चौड़ी चोंच होने के कारण इसका पेट भी जल्दी भर जाता है और इसे छोटी चोंच वाले पक्षियों के समान दिनभर दाना नहीं चुगना पड़ता है।

टूकन घने जंगलों में रहता है तथा किसी ऊँचे पेड़ की मोटी डाल पर अपना घोंसला बनाता है। मादा टूकन अण्डे देने के साथ ही साथ इन्हें सेने का कार्य भी करती है। कुछ समय बाद अण्डों से बच्चे निकल आते हैं। इस समय इनकी चोंच सामान्य आकार की होती है किन्तु धीरे–धीरे यह लम्बी और मोटी होती जाती है। देखने में टूकन की चोंच भारी लगती है, परन्तु वास्तव में वह बड़ी हल्की होती है, अतः इसे उड़ने में कोई कष्ट नहीं होता। टूकन के पंख लाल, पीले तथा नारंगी रंग के अत्यन्त सुन्दर तथा आकर्षक होते हैं। इन्हीं पंखों के लिए इसका शिकार किया जाता है। यदि टूकन का शिकार इसी प्रकार होता रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब इस प्रजाति के सभी पक्षी संसार से विलुप्त हो जायेंगे। ❖

नन्हीं चिड़िया

– गौरीशंकर वैश्य

मैं नन्हीं–सी चिड़िया हूँ।
करती रहती चीं चीं चूँ।

मेरा नीड़ उजाड़ दिया,
बोलो! मैं अब कहाँ रहूँ।

कहीं घरों में जगह नहीं,
अंडे अपने कहाँ धरूँ।

डर है विद्युत–तारों का,
किसी को क्या है जियूँ–मरूँ।

रहे नहीं जलस्रोत कहीं,
कैसे अपनी प्यास हरूँ।

तरस रही हूँ दानों को,
कैसे अपना पेट भरूँ।

पौधे–पेड़ नहीं दिखते,
हवा विषैली बहुत डरूँ।

टॉवर फैलाते विकिरण,
हो उन्मुक्त कहाँ विचरूँ।

जीवन में कुछ काम करो

– महेन्द्र सिंह शेखावत

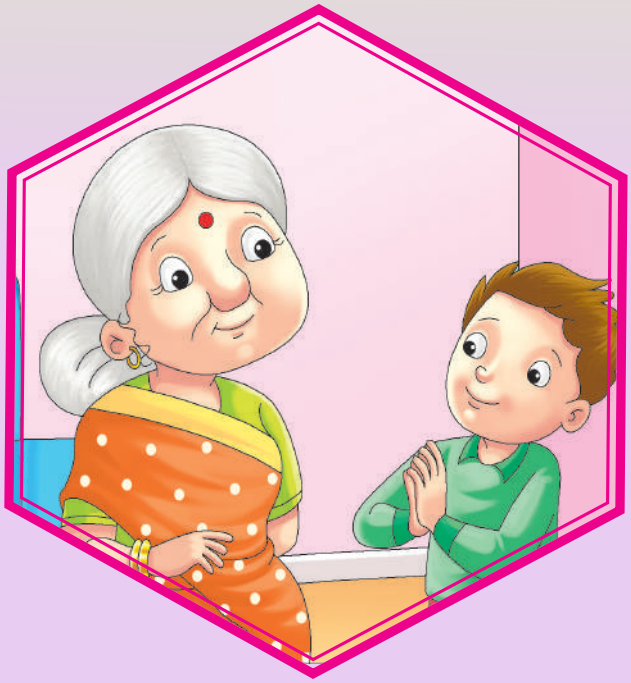

जीवन में कुछ काम करो,
इस जग में कुछ नाम करो।

सेवा का फल मीठा होता,
बड़ों का नित सम्मान करो।

व्यर्थ न जीवन बीते यह,
जीवन का कल्याण करो।

सुख पहुँचाओ तुम सबको,
अहिंसा का नित ध्यान करो।

मानव तन अनमोल रतन,
इस का न अभिमान करो।

पढ़ो और हँसो

संटी पार्किंग में अपनी कार के पहिए निकाल रहा था।

बंटी : ओए ये क्या कर रहा है?

संटी : कार के दो पहिये निकाल रहा हूँ।

बंटी : लेकिन तू पहिये क्यों निकाल रहा है? ये तो देखने में ठीक लग रहे हैं।

संटी : देख नहीं रहा, यहाँ लिखा है, 'ओनली टू व्हीलर पार्किंग'।

नरेश : उमेश, क्या तुम गरीबी मिटा सकते हो?

उमेश : क्यों नहीं, तुम बोर्ड पर लिख दो मैं मिटा दूँगा।

शिवम की माँ की तबीयत खराब हो गई।

डॉक्टर ने कहा : टेस्ट होंगे।

शिवम : हे भगवान अब क्या होगा? मेरी माँ तो अनपढ़ है।

डाकू मंगल सिंह मोटूराम के घर में घुस गया।

डाकू : सोना कहाँ है, जल्दी बताओ।

मोटू : पूरा घर खाली है, जहाँ सोना चाहते हो सो जाओ।

– वीना कारवानी (आगरा)

एक चोर को चोरी के जुर्म में पुलिस वैन में बैठाकर ले जाया जा रहा था।

सिपाही ने पूछा : तुम इतने खुश क्यों हो?

चोर बोला : आज मैं पहली बार सरकारी गाड़ी में बैठा हूँ, इसलिए।

मोहन : यार मैं अपना पर्स घर भूल आया हूँ, मुझे 100 रू. की जरूरत है।

सोहन : कोई बात नहीं। एक दोस्त ही दोस्त के काम आता है। ये लो 10 रुपये। घर जाकर अपना पर्स ले आओ।

रिंग मास्टर : (सर्कस के कर्मचारी से) तुमने शेर के बाड़े में ताला क्यों नहीं लगाया?

कर्मचारी : क्या जरूरत है सर। इतने खतरनाक जानवर को कौन चोरी करेगा।

–आ जाओ कुत्ते से डरो नहीं। – एक व्यक्ति ने घर पर आए मेहमान से कहा।

–यह काटता नहीं क्या? – मेहमान ने पूछा।

–यही तो मैं देखना चाहता हूँ मैं इसे आज ही खरीदकर लाया हूँ। – व्यक्ति बोला।

एक आदमी ने रेलवे स्टेशन पर एक व्यक्ति से पूछा– श्रीमान पूछताछ कार्यालय किधर है?

व्यक्ति बोला : 'इंक्वायरी ऑफिस' से मालूम कीजिए।

एक व्यक्ति ने 'वेटलिफ्टर' से पूछा– तुम एक बार में कितने आदमी उठा सकते हो?

वेटलिफ्टर : कम से कम पाँच।

व्यक्ति : बस, तुमसे अच्छा तो मेरा मुर्गा है, जो सुबह पूरे मुहल्ले को उठा देता है।

मालिक : हमें नौकर की जरूरत है लेकिन हम ऐसा नौकर चाहते हैं जो कंजूस हो।

नौकर : जी कंजूसी की वजह से ही मैं पिछली जगह अपने कपड़े न पहनकर मालिक के कपड़े पहन लिया करता था।

डॉक्टर : (मरीज से) आपने जो चैक दिया था वो बैंक से वापिस आ गया है।

मरीज : मेरी बीमारी भी लौट आई है।

पानी के जहाज के साथ एक कंजूस भी डूब रहा था लेकिन फिर भी वो हँस रहा था।

दूसरे यात्री ने पूछा– हँस रहे हो क्यों भाई?

कंजूस : शुक्र है मैंने रिटर्न का टिकट नहीं लिया।

एक महिला पालतू पशुओं के विक्रेता से बोली– मुझे यह कुत्ता तो पसन्द है लेकिन इसकी टांगे बहुत छोटी–छोटी हैं।

विक्रेता बोला– छोटी कहाँ हैं? चारों टांगे जमीन तक तो पहुँच रही हैं।

एक बार एक हाथी जंगल से गुजर रहा था तो सब चूहे अपने–अपने बिलों में घुस गये परन्तु एक चूहा अपने पैर बिल से बाहर निकाले हुए था।

दूसरे चूहे ने उससे पूछा– तुमने अपना पैर बाहर क्यों निकाल रखा है?

पहला चूहा बोला– जब हाथी मेरे पास आयेगा तो मैं हाथी को अपने पैर से अड़ंगी मारकर गिरा दूँगा।

एक मोटी औरत डॉक्टर के पास गई और बोली– डॉक्टर आपने तो कहा था कि गेम्स खेलने से मोटापा कम होता है पर मेरा तो बिल्कुल कम नहीं हुआ।

डॉक्टर : आप कौन–सा 'गेम' खेलती हो?

मोटी औरत : विडियो गेम्स।

चिंटू (अपने दोस्त से) : मैं सुबह जल्दी उठकर रोज घूमने जाता हूँ।

दोस्त : पर मैं सुबह उठकर कभी घूमने नहीं जाता।

चिंटू : अच्छा क्यों?

दोस्त : जब धरती स्वयं घूम रही है तो फिर मैं क्यों कष्ट करूँ?

टी.टी. : तुम्हें पता नहीं बिना टिकिट ट्रेन में बैठना गुनाह है।

यात्री : मुझे पता है, इसलिए तो मैं खड़ा हूँ।

– रतनेश मिश्रा (वापी)

– सीताराम गुप्ता

एक बुजुर्ग व्यक्ति था; जो बेहद कमज़ोर और बीमार था। रहता भी अकेले ही था। उसके कंधों में दर्द रहता था लेकिन वह इतना कमज़ोर था कि खुद अपने हाथों से दवा लगाने में भी असमर्थ था। कंधों पर दवा लगवाने के लिए कभी किसी से मिन्नतें करता तो कभी किसी से। एक दिन बुजुर्ग व्यक्ति ने पास से गुज़रने वाले एक युवक से कहा कि बेटा ज़रा मेरे कंधों पर ये दवा मल दो। भगवान तेरा भला करेगा।

युवक ने कहा कि बाबा मेरे हाथों की अुंगलियों में तो खुद दर्द रहता है। मैं कैसे तेरे कंधों की मालिश करूँ?

बुजुर्ग ने कहा कि बेटा दवा मलने की ज़रूरत नहीं। बस इस डिबिया में से थोड़ी–सी मरहम अपनी अंगुलियों से निकालकर मेरे कंधों पर फैला दे। युवक ने अनिच्छा से डिबिया में से थोड़ी –सी मरहम लेकर अंगुलियों से बुजुर्ग व्यक्ति के दोनों कंधों पर लगा दी। दवा लगते ही बुजुर्ग की बेचैनी कम होने लगी और वो इसके लिए उस युवक को आशीर्वाद देने लगा। बेटा, भगवान तेरी अंगुलियों को भी जल्दी ठीक कर दे। बुजुर्ग के आशीर्वाद पर युवक अविश्वास से हँस दिया लेकिन साथ ही उसने महसूस किया कि उसकी उँगलियों का दर्द भी ग़ायब–सा होता जा रहा है।

वास्तव में बुजुर्ग को मरहम लगाने के दौरान युवक की अंगुलियों पर भी कुछ मरहम लग गई थी। यह उस मरहम का ही कमाल था जिससे युवक की अंगुलियों का दर्द ग़ायब सा होता जा रहा था। अब तो युवक सुबह, दोपहर और शाम तीनों वक़्त बुजुर्ग व्यक्ति के कंधों पर मरहम लगाता और उसकी सेवा करता। कुछ ही दिनों में बुजुर्ग पूरी तरह से ठीक हो गया और साथ ही युवक के दोनों हाथों की अंगुलियाँ भी दर्दमुक्त होकर ठीक से काम करने लगीं। तभी तो कहा गया है कि जो दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम लगाता है उसके खुद के ज़ख़्मों को भरने में देर नहीं लगती। दूसरों की मदद करके हम अपने लिए रोग–मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु ही सुनिश्चित करते हैं। ❖

कोई चीज है तो ...

जीतने के लिए कोई चीज है तो	:	प्रेम
पीने के लिए कोई चीज है तो	:	क्रोध
देने के लिए कोई चीज है तो	:	दान
दिखाने के लिए कोई चीज है तो	:	दया
लेने के लिए कोई चीज है तो	:	ज्ञान
कहने के लिए कोई चीज है तो	:	सत्य
रखने के लिए कोई चीज है तो	:	इज्जत
फेंकने के लिए कोई चीज है तो	:	ईर्ष्या
छोड़ने के लिए कोई चीज है तो	:	मोह

संग्रहकर्ता : रामदरश यादव

दाने की कीमत

– अमर सिंह शौल

"मक्की को काटे हुए दस बारह दिन हो गए हैं। अब वह सूख गई होगी। रामू अपनी पत्नी शीला से बोला– अब हमें भुट्टे निकाल लेने चाहिए।"

"ठीक है जी।" शीला ने कहा। रामू व शीला दोनों खेत में भुट्टे निकालने के लिए चले गए। उनके साथ उनका दस ग्यारह साल का बेटा कालू भी चला गया। शीला व रामू दोनों मक्की से भुट्टे निकाल रहे थे। कालू ऐसे ही बैठा हुआ था।

"कालू तुम ऐसे क्यों बैठे हो? तुम भी भुट्टे निकालो।" शीला ने उससे कहा।

कालू भी मक्की में से भुट्टे निकालने लग गया। भुट्टे निकालते–निकालते उसके हाथ में एक सड़ा हुआ भुट्टा आ गया। उसने उसे एक किनारे फेंक दिया। रामू ने उसे ऐसा करते देख लिया।

"कालू तुमने इस भुट्टे को किनारे क्यों फेंक दिया।"

"पिता जी सड़ा हुआ था।"

"इसे उठाकर मेरे पास लाओ।" रामू ने कालू से कहा।

कालू ने उस भुट्टे को उठाकर अपने पिता को दे दिया। रामू ने भुट्टे को अपने पास रख लिया। रामू ने वह भुट्टा अपने हाथों में लिया जो कालू ने सड़ा हुआ समझकर फेंक दिया था।

"कालू बेटे इस भुट्टे को गौर से देखो। यह

पूरी तरह से नहीं सड़ा हुआ है। इसमें कुछ दाने ठीक हैं।'' रामू ने उस भुट्टे से ठीक–ठाक दाने निकालकर कालू के सामने रख दिए।

''कालू बेटा, इन भुट्टे के दानों की गिनती करना।''

भुट्टे के दानों की गिनती करने के बाद कालू बोला– ''दस दाने।''

''ठीक है।''

इसके बाद रामू ने कालू को एक बड़े साइज का भुट्टा थमाते हुए कहा, ''कालू बेटा, ये लो। गिनती करना की इस भुट्टे में कितने दाने हैं?''

''पिता जी, इसमें पाँच सौ दाने हैं।'' कालू ने गिनती करने के बाद कहा।

बड़े साइज के भुट्टे के बाद रामू ने कालू के हाथ में एक छोटे साइज का भुट्टा थमाते हुए कहा, ''कालू बेटा, अब इस भुट्टे के दानों की गिनती करना।''

''पिता जी, एक सौ दाने।'' वह गिनती करने के बाद बोला।

''कालू बेटे, तुमने जिस भुट्टे को सड़ा समझकर फेंक दिया था। उसमें से दस दाने ठीक निकले। जानते हो एक मक्की का दाना बीजने से बड़े साइज के भुट्टे में पाँच सौ दाने तथा छोटे साइज के भुट्टे में से कम से कम सौ दाने निकलते हैं। रामू ने उसकी ओर देखते हुए कहा, ''इस तरह तुम कितना बड़ा नुकसान करने जा रहे थे। एक–एक दाने की कीमत होती है।''

''अब मैं समझ गया पिता जी। दोबारा ऐसी गलती नहीं करूँगा।'' कालू बोला। उस दाने की की कीमत समझ चुकी थी। ❖

चिड़िया बन गई प्रेरणा

– दिनेश दर्पण

कई वर्ष पहले की बात है। संयुक्त राज्य अमेरिका में डिफोस्ट नाम का एक लड़का रहता था। पढ़ने–लिखने में उसकी बहुत अधिक रूचि थी। उसे गणित के सवाल विशेष रूप से दिलचस्प लगते थे। अचानक एक दिन डिफोस्ट के पिता का निधन हो गया। उसके सारे सपने चूर–चूर हो गये। परिवार की सारी जिम्मेदारियाँ बालक डिफोस्ट के नन्हें मासूम कंधों पर आ गई। उसके पिता जी जूते बनाने का काम करते थे। इसलिए उसकी माँ ने भी नन्हें मासूम बालक डिफोस्ट को भी इसी काम पर लगा दिया।

एक दिन जब डिफोस्ट नये बने हुए जूते धूप में रखने के लिए जा रहा था तो अचानक उसकी नजर एक चिड़िया पर पड़ी। चिड़िया को देखते ही याद आया कि कल ही मोहल्ले के कुछ शरारती लड़कों ने उसका घोसला उजाड़ दिया था। आज वही चिड़िया फिर से अपने नये घोसले को बनाने के लिए एक–एक तिनका चुन–चुनकर इकट्ठा कर रही है। चिड़िया के इस कार्य को देखकर उसकी आँखें चमकने लगीं। उसने मन ही मन कुछ निश्चय किया। जैसे उसे नई शक्ति मिली, नई प्रेरणा मिली।

अब वह जूते बनाने के बाद धूप में सूखने को रख देता और अपने इस खाली समय में वह गणित की किताबें पढ़ने में व्यस्त हो जाता। जब जूते सूख जाते तो वह जूते बनाने के अगले काम में जुट जाता। इसी प्रकार डिफोस्ट ने माध्यमिक स्तर से उच्च शिक्षा ग्रहण की और एक दिन वह अपनी लगन और मेहनत से विश्व का जाना–माना गणितज्ञ बन गया। ❖

पानी

सबका जीवनदाता पानी,
सबकी प्यास बुझाता पानी।

पानी से ही हरियाली है,
पानी से हैं वन–उपवन।
पानी से ही वसुधा फलती,
पानी ही है उत्तम धन।।

पानी बिना नहीं है जीवन,
पानी से फसलें उगती।
ताल–तलैया, झीलें, झरने,
पानी से नदियाँ बहतीं।।

पानी है अनमोल धरा पर,
पानी ही जीवन आधार।
पानी से हम सीखें सेवा,
याद रखें अनुपम उपकार।।

आओ बचत करें पानी की,
पानी को न व्यर्थ बहायें।
बूँद–बूँद से सागर बनता,
सबको यही बात समझायें।।

साफ–सफाई

मम्मी ने यह बात बताई,
आसपास तुम रखो सफाई।

यहाँ–वहाँ मत फेंको कचरा,
घर को रखो साफ–सुथरा।

जहाँ न होती साफ–सफाई,
समझो सौ बीमारी आई।

गंदगी को दूर भगाओ,
सब रोगों से मुक्ति पाओ।

स्वच्छता की आदत अपना लो,
कूड़ा–कूड़ेदान में डालो।

स्वच्छ रहेगा जब परिवेश,
सुन्दर होगा अपना देश।

– प्रस्तुति नमिता वैश्य

फरवरी अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. इशाना ठकराल — 8 वर्ष
   6/65, दूसरी मंजिल
   गीता कालोनी, दिल्ली

2. समीप सरदाना — 9 वर्ष
   13/103, गीता कालोनी,
   दिल्ली

3. विधिता भारद्वाज — 7 वर्ष
   206, न्यू राष्ट्रीय अपार्टमेंट,
   सेक्टर–18ए, द्वारका, दिल्ली

4. दीपांशु मांगल — 9 वर्ष
   गाँव : धर्मपुरा,
   जिला : कैथल (हरियाणा)

5. रिद्धि सैनी — 8 वर्ष
   आरजेडजी–846–ए, गली नं. 17,
   राजनगर पार्ट–2, पालम कॉलोनी,
   नई दिल्ली

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

समदिशा
(सिरसा)
पुष्पदीप
(प्रोफेसर कालोनी, पटियाला)
मानवी बंसल
(मंदिर चौक, लहरागागा),
डेजी
(मोहनी नगर, वृन्दावन)
हर्षिता
(लक्ष्मी नगर, मंडी गोबिंदगढ़),
सुहानी
(एनआईटी, फरीदाबाद),
यश लखवानी
(भाटापारा, चित्तौड़गढ़)
मोहित गुरनानी, आर्या हेमराजानी, ऋषि चेलानी, मंथन पंजवानी, नंदिनी, हार्दिक, चांदनी, लहर मूलचंदानी, अनंत बम्बानी, कुश खिनानी, ओम सोमजनी, प्रणति जोशी, मुस्कान, सुमित रूपानी
(गोधरा)।

अप्रैल अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 30 अप्रैल तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली–110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) जून अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का पाठक हूँ। हँसती दुनिया का प्रत्येक अंक बड़ा ही ज्ञानवर्द्धक और रोचक लगता है। इसकी सम्पूर्ण सामग्री ज्ञानवर्द्धक और शिक्षाप्रद होती है।

– संजीव कुमार (चंदौसी)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत ही अच्छी लगती है। मैं बड़े चाव से हँसती दुनिया पढ़ता हूँ एवं हँसती दुनिया आने का इंतजार करता हूँ तथा अपने मित्रों को भी हँसती दुनिया पढ़ाता हूँ। मैं इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। मेरी मनोकामना है कि यह हँसती दुनिया दिन–प्रतिदिन उन्नति के रास्ते पर अग्रसर रहे।

– शोभित (इटावा)

मुझे हँसती दुनिया बहुत पसंद है। मैं हँसती दुनिया पत्रिका प्रतिमाह पढ़ती हूँ। 'अनमोल वचन' एवं 'विज्ञान प्रश्नोत्तरी' काफी शिक्षाप्रद होते हैं। मैं हँसती दुनिया की प्रगति हेतु ईश्वर से मंगलकाना करती हूँ।

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

हँसती दुनिया वास्तव में नन्हें–मुन्ने बच्चों की प्रिय पत्रिका है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि बड़ों के लिए इसकी कुछ अहमियत नहीं है। इसमें बड़ों के लिए भी ज्ञानवर्द्धक बातें होती हैं।

– दीपक जेस्वानी (हिंगनघाट)

मैं और मेरा परिवार हँसती दुनिया के पुराने पाठक हैं। यह पत्रिका हम तब से पढ़ रहे हैं जब मैं और मेरी बहन बहुत छोटे थे। मुझे याद है मेरे पापा जी ने जब हमें इस पत्रिका को पढ़ने के लिए दिया था तब मैंने बड़े चाव से एक पत्रिका की एक-एक कहानी को पढ़कर सुनाया तो पापा जी ने इस पत्रिका की सदस्यता ग्रहण कर ली थी।

– श्रुति अरोड़ा (मलेरकोटला)

मासिक पत्रिका हँसती दुनिया ने बाल साहित्य और बाल पत्रकारिता को एक नई दिशा प्रदान की है। बाल साहित्य के रूप में यह पत्रिका एक वृक्ष बनती जा रही है और उपयोगी साहित्य के माध्यम से बच्चों की भाषा और साहित्यिक ज्ञान बढ़ाने में सार्थक भूमिका निभा रही है।

– डॉ. दर्शन सिंह आशट (पटियाला)

मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मैं हर महीने हँसती दुनिया के आने का इन्तजार करता हूँ। मेरे कई मित्रों को यह पत्रिका पसन्द है तथा इसमें प्रकाशित होने वाले स्तम्भ 'अनमोल वचन' एवं 'विज्ञान प्रश्नोत्तरी' बच्चों के लिए काफी ज्ञानवर्द्धक एवं शिक्षाप्रद होते हैं।

– मोहक कुमार (पानीपत)

हँसती दुनिया से बहुत ज्ञानवर्द्धक बातें सीखने का मिलती हैं। इसमें मुझे शिक्षाप्रद कहानियाँ एवं प्रेरक–प्रसंग बहुत पसंद हैं।

– मुन्नाराम (मऊनाथ)

पहेलियों के उत्तर

1. नारियल, 2. गोल्डफिश, 3. दूध, 4. बाल, 5. नीलकंठ, 6. खजूर, 7. खीरा, 8. धान, 9. सिंघाड़ा, 10. धुआँ।

Download The App

Sant Nirankari Mission "SNM" App

The application is available for the iOS & Android smartphones.

Download on the App Store

ANDROID APP ON Google Play

Scan QR code

Scan QR code to download Sant Nirankari Mission "SNM" App

For iOS Devices

For Android Devices

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

NIRANKARI JEWELS

78-84, Edward Line, Kingsway Camp, Delhi, 110009
Near G.T.B. Nagar Metro Station Gate No. 4

011-42870440, 42870441, 47058133
nirankari_jewels@hotmail.com
www.nirankarijewels.com
@nirankarijewelsdelhi
Nirankari Jewels Pvt. Ltd.

Monday Closed

Customer Care : **9818883394**